IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

शिक्षा में मास्लो की आवश्यकताओं का सोपानक्रम: कक्षा परिवेश में इसके अनुप्रयोग की एक अवधारणात्मक समीक्षा

आराधना सिंह

शोधार्थी, मनराखन महतो बी.एड. कॉलेज, रांची, झारखंड

ORCID ID: 0009-0008-4872-918X

सारांश

शिक्षा केवल ज्ञान के हस्तांतरण तक सीमित नहीं है; यह एक गहन मानवीय प्रक्रिया है जो मूलभूत मनोवैज्ञानिक और शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति पर निर्भर करती है। अब्राहम मास्लो का आवश्यकताओं का सोपानक्रम (1943) शिक्षकों को छात्रों के व्यवहार, अभिप्रेरणा और अधिगम परिणामों को समझने के लिए एक प्रभावशाली दृष्टिकोण प्रदान करता है। यह शोधपत्र मास्लो के सिद्धांत और शैक्षिक परिवेश में उसके व्यावहारिक अनुप्रयोग की अवधारणात्मक समीक्षा प्रस्तुत करता है। सोपानक्रम के प्रत्येक स्तर — शारीरिक आवश्यकताएँ, सुरक्षा, प्रेम एवं अपनेपन की भावना, आत्म-सम्मान और आत्म-साक्षात्कार — की परीक्षा करते हुए यह पत्र यह स्पष्ट करता है कि किसी भी स्तर पर अपूर्ण आवश्यकता किस प्रकार अधिगम प्रक्रिया को बाधित कर सकती है।

मुख्य शब्द: मास्लो का सोपानक्रम, शिक्षा, छात्र अभिप्रेरणा, कक्षा आवश्यकताएँ, आत्म-साक्षात्कार, समग्र शिक्षा

I. परिचय

शिक्षा को मानव विकास की आधारशिला माना जाता है। परंतु शिक्षा की प्रभावशीलता केवल पाठ्यक्रम की संरचना या शिक्षण पद्धति पर निर्भर नहीं करती, बल्कि इस बात पर भी निर्भर करती है कि छात्रों की मूलभूत मानवीय आवश्यकताओं को पर्याप्त रूप से संबोधित किया जा रहा है या नहीं। जो छात्र भूखा हो, असुरक्षित हो या सामाजिक रूप से अलग-थलग हो, उससे उसी स्तर की अधिगम-संलग्नता की अपेक्षा नहीं की जा सकती जो एक ऐसे छात्र से की जाती है जिसकी आधारभूत आवश्यकताएँ पूरी हों।

अमेरिकी मनोवैज्ञानिक अब्राहम हेरोल्ड मास्लो (1908–1970) ने अपने 1943 के शोधपत्र "A Theory of Human Motivation" में आवश्यकताओं के सोपानक्रम का प्रतिपादन किया। मास्लो ने मानवीय आवश्यकताओं को पाँच स्तरों के एक पिरामिड में व्यवस्थित किया और तर्क दिया कि उच्च-स्तरीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए निम्न-स्तरीय आवश्यकताओं का संतुष्ट होना आवश्यक है। यद्यपि यह सिद्धांत मूलतः शैक्षिक उद्देश्यों के लिए नहीं बनाया गया था, तथापि शिक्षण और अधिगम में इसका व्यापक और प्रभावशाली अनुप्रयोग हुआ है।

यह शोधपत्र मास्लो के सोपानक्रम को औपचारिक शिक्षा के संदर्भ में परखता है और यह जानने का प्रयास करता है कि पिरामिड का प्रत्येक स्तर छात्र-अधिगम से किस प्रकार संबंधित है और शिक्षक इसे ध्यान में रखते हुए किस प्रकार का वातावरण तैयार कर सकते हैं।

II. मास्लो का आवश्यकताओं का सोपानक्रम: एक अवलोकन

मास्लो का मॉडल पारंपरिक रूप से पाँच स्तरों वाले एक पिरामिड के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। तालिका 1 प्रत्येक स्तर का संक्षिप्त विवरण प्रस्तुत करती है।

तालिका 1: मास्लो की आवश्यकताओं के पाँच स्तर

स्तर	आवश्यकता वर्ग	मुख्य विशेषताएँ
स्तर 1	शारीरिक आवश्यकताएँ	भोजन, जल, निद्रा, उष्मा, आश्रय
स्तर 2	सुरक्षा आवश्यकताएँ	सुरक्षा, स्थिरता, भय से मुक्ति
स्तर 3	प्रेम एवं अपनत्व	मित्रता, अंतरंगता, सामुदायिकता
स्तर 4	आत्म-सम्मान	आत्मविश्वास, उपलब्धि, मान्यता
स्तर 5	आत्म-साक्षात्कार	सृजनशीलता, व्यक्तिगत विकास, संभावना की पूर्ति

मास्लो ने बाद में इस मॉडल में संज्ञानात्मक आवश्यकताओं (ज्ञान और समझ), सौंदर्यात्मक आवश्यकताओं (सुंदरता और व्यवस्था) तथा अतिक्रमण (दूसरों को आत्म-साक्षात्कार में सहायता करना) को भी शामिल किया। तथापि, शैक्षिक संदर्भों में पाँच-स्तरीय मॉडल का उपयोग सर्वाधिक प्रचलित रहा है।

III. शिक्षा में मास्लो के सोपानक्रम का अनुप्रयोग

3.1 स्तर 1: कक्षा में शारीरिक आवश्यकताएँ

मास्लो के सोपानक्रम का सबसे मूलभूत स्तर शरीर की बुनियादी जैविक आवश्यकताओं को संबोधित करता है। शैक्षिक संदर्भ में, जो छात्र भूखे, थके हुए या शारीरिक रूप से अस्वस्थ होकर विद्यालय आते हैं, वे तंत्रिका-तंत्र और भावनात्मक दृष्टि से प्रभावशाली ढंग से एकाग्र होने में असमर्थ होते हैं। शोध यह स्पष्ट रूप से दर्शाता है कि पोषण और पर्याप्त नींद का संज्ञानात्मक कार्यक्षमता, स्मृति धारण और शैक्षणिक प्रदर्शन पर सीधा और मापनीय प्रभाव पड़ता है।

कक्षा स्तर पर इसके निहितार्थों में पेयजल की उपलब्धता, पर्याप्त प्रकाश और वायु-संचार, आरामदायक बैठने की व्यवस्था और निर्धारित विराम-काल शामिल हैं। संस्थागत स्तर पर, मध्याह्न भोजन कार्यक्रम और स्वास्थ्य संबंधी पहलें इस मूलभूत आवश्यकता को प्रत्यक्ष रूप से संबोधित करती हैं।

3.2 स्तर 2: सुरक्षा आवश्यकताएँ— सुरक्षित अधिगम वातावरण

शारीरिक आवश्यकताओं की पूर्ति के पश्चात् छात्रों को सुरक्षा की भावना की आवश्यकता होती है — शारीरिक और भावनात्मक, दोनों दृष्टियों से। जिस कक्षा में कोई छात्र धमकाने, उपहास या अनिश्चित दंड का भय अनुभव करता हो, वहाँ अधिगम गंभीर रूप से बाधित हो जाता है। भावनात्मक सुरक्षा का अर्थ है — बिना अपमान के भय के प्रश्न पूछने, गलतियाँ करने और विचार व्यक्त करने की स्वतंत्रता।

जो शिक्षक स्पष्ट एवं सुसंगत कक्षा-नियम स्थापित करते हैं, पुनर्स्थापनात्मक अनुशासन पद्धतियाँ अपनाते हैं और सम्मानजनक संवाद का आदर्श प्रस्तुत करते हैं, वे छात्रों की सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं को पूरा करने में प्रत्यक्ष योगदान देते हैं। बदमाशी-रोधी नीतियाँ और परामर्श सेवाएँ संस्थागत स्तर पर सुरक्षा को सुदृढ़ करती हैं।

3.3 स्तर 3: प्रेम और अपनेपन की भावना— अधिगम का सामाजिक आयाम

मनुष्य स्वभावतः सामाजिक प्राणी है। जो छात्र उपेक्षित, अकेले या अप्रिय महसूस करते हैं — चाहे घर में हो या विद्यालय में — वे प्रायः विमुखता, व्यवहारगत कठिनाइयाँ और शैक्षणिक अभिप्रेरणा में कमी प्रदर्शित करते हैं। कक्षा-समुदाय, सहकर्मी संबंध और शिक्षक-छात्र बंधन, अपनेपन की आवश्यकता को पूरा करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

शिक्षक सहयोगात्मक अधिगम रणनीतियों, समावेशी कक्षा पद्धतियों, छात्रों के साथ नियमित व्यक्तिगत संवाद और स्वीकृति एवं पारस्परिक सम्मान की संस्कृति के विकास के माध्यम से इस आवश्यकता को संबोधित कर सकते हैं। जब छात्र स्वयं

को सम्मिलित महसूस करते हैं, तो वे अधिक सहभागी होते हैं और बौद्धिक चुनौतियों का सामना करने में अधिक दृढ़ रहते हैं।

3.4 स्तर 4: आत्म-सम्मान की आवश्यकताएँ — आत्मविश्वास और मान्यता

आत्म-सम्मान की आवश्यकताओं में आत्म-सम्मान (स्वयं की क्षमताओं में विश्वास) और दूसरों से प्राप्त सम्मान (मान्यता, आदर और प्रतिष्ठा) दोनों सम्मिलित हैं। शैक्षिक परिवेश में यह इस बात से परिलक्षित होता है कि छात्र अपनी शैक्षणिक क्षमता के बारे में कैसा अनुभव करते हैं और शिक्षक एवं सहपाठी उनके प्रयासों और उपलब्धियों को कैसे स्वीकार करते हैं।

सकारात्मक अनुबलन, विशिष्ट एवं रचनात्मक प्रतिपुष्टि, सार्थक उत्तरदायित्वों का आवंटन और छात्रों के कार्यों का सार्वजनिक प्रदर्शन — ये सभी आत्म-सम्मान को सुदृढ़ करने वाली रणनीतियाँ हैं। विकास मानसिकता शोध के अनुरूप, प्रशंसा परिणाम के बजाय प्रयास और प्रक्रिया पर केंद्रित होनी चाहिए।

3.5 स्तर 5: आत्म-साक्षात्कार — शिक्षा का लक्ष्य

आत्म-साक्षात्कार मास्लो के सोपानक्रम का सर्वोच्च स्तर है — यह व्यक्ति की पूर्ण संभावनाओं की प्राप्ति का प्रतिनिधित्व करता है। शैक्षिक संदर्भ में यह वास्तविक बौद्धिक जिज्ञासा, आंतरिक अभिप्रेरणा, सृजनात्मक चिंतन और ज्ञान के प्रति स्वाभाविक प्रेम से संबंधित है। तर्कसंगत रूप से, यही समस्त शैक्षिक प्रयासों का परम लक्ष्य है।

आत्म-साक्षात्कार तब स्वाभाविक रूप से प्रकट होता है जब निम्न-स्तरीय आवश्यकताएँ पूर्ण होती हैं। शिक्षक इसे छात्र-केंद्रित विकल्पों, परियोजना-आधारित और जिज्ञासा-प्रेरित दृष्टिकोणों, पाठ्येतर अन्वेषण के समर्थन और विकास मानसिकता के पोषण के माध्यम से सहायता कर सकते हैं। जो छात्र सच्चे अर्थों में आत्म-साक्षात्कार की ओर अग्रसर होता है, उसे अधिगम के लिए बाह्य पुरस्कारों की आवश्यकता नहीं होती — खोज की प्रक्रिया ही उसकी प्रेरणा बन जाती है।

IV. मास्लो के सोपानक्रम के अनुरूप कक्षा रणनीतियाँ

तालिका 2 में वे विशिष्ट एवं व्यावहारिक रणनीतियाँ संकलित की गई हैं जिन्हें शिक्षक, विद्यालय प्रशासक और अभिभावक सोपानक्रम के प्रत्येक स्तर पर अपना सकते हैं।

तालिका 2: मास्लो के स्तर एवं संगत कक्षा रणनीतियाँ

आवश्यकता स्तर	कक्षा रणनीति	अपेक्षित परिणाम
शारीरिक	भोजन कार्यक्रम, जल-विराम, आरामदायक बैठक व्यवस्था	एकाग्रता एवं ऊर्जा में सुधार
सुरक्षा	स्पष्ट नियम, बदमाशी-रोधी नीति, सुसंगत दिनचर्या	चिंता में कमी, अधिक सहभागिता
अपनत्व	समूह कार्य, नाम से अभिवादन, समावेशी गतिविधियाँ	सुदृढ़ अभिप्रेरणा एवं भागीदारी
आत्म-सम्मान	रचनात्मक प्रतिपुष्टि, छात्र भूमिकाएँ, उपलब्धि प्रदर्शन	आत्मविश्वास एवं प्रयास में वृद्धि
आत्म-साक्षात्कार	परियोजना-आधारित अधिगम, छात्र विकल्प, जिज्ञासा कार्य	आंतरिक प्रेरणा, सृजनशीलता, गहन अधिगम

V. चुनौतियाँ और सीमाएँ

मास्लो का ढाँचा मूल्यवान अंतर्दृष्टि प्रदान करता है, तथापि इसकी कुछ सीमाओं और आलोचनाओं को स्वीकार करना आवश्यक है। प्रथमतः, मॉडल की कठोर श्रेणीबद्ध प्रकृति पर प्रश्नचिह्न लगाया गया है — शोध यह दर्शाता है कि लोग उच्च-स्तरीय आवश्यकताओं की पूर्ति के लिए प्रयास कर सकते हैं, चाहे निम्न-स्तरीय आवश्यकताएँ पूरी तरह पूर्ण न हुई हों। द्वितीयतः, यह मॉडल मुख्यतः पश्चिमी, व्यक्तिवादी सांस्कृतिक मान्यताओं पर आधारित है और सामूहिकतावादी समाजों को पूरी तरह प्रतिबिंबित नहीं कर सकता।

व्यवहार में, कक्षा शिक्षकों की उन शारीरिक और सुरक्षा संबंधी आवश्यकताओं को संबोधित करने की क्षमता सीमित होती है जो विद्यालय के बाहर के वातावरण से उत्पन्न होती हैं — विशेषतः गरीबी, पारिवारिक अस्थिरता या संघर्ष की स्थितियों में।

इसके अलावा, एक साथ पूरी कक्षा की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए महत्वपूर्ण संसाधनों, प्रशिक्षण और संस्थागत समर्थन की आवश्यकता होती है।

इन सीमाओं के बावजूद, मास्लो का सोपानक्रम उन शिक्षकों के लिए एक उपयोगी अनुमानी ढाँचा बना हुआ है जो संपूर्ण बालक को समझना चाहते हैं — केवल शैक्षणिक छात्र को नहीं।

VI. निष्कर्ष

मास्लो का आवश्यकताओं का सोपानक्रम शिक्षकों को उन परिस्थितियों को समझने के लिए एक सार्थक और सुलभ ढाँचा प्रदान करता है जो प्रभावी अधिगम के लिए आवश्यक हैं। छात्रों को पोषित और विश्रांत सुनिश्चित करने से लेकर सुरक्षित और समावेशी कक्षा संस्कृति के निर्माण तक, आत्मविश्वास के विकास से लेकर अधिगम के प्रति प्रेम जागृत करने तक — सोपानक्रम का प्रत्येक स्तर शिक्षकों, विद्यालय नेताओं और नीति-निर्माताओं के लिए प्रत्यक्ष एवं व्यावहारिक निहितार्थ रखता है।

जो शिक्षा अपने शिक्षार्थियों की मानवीय आवश्यकताओं की उपेक्षा करती है, वह अपने सर्वोच्च लक्ष्यों को प्राप्त करने में असमर्थ रहती है। मास्लो की अंतर्दृष्टि को शिक्षण-योजना और विद्यालय नीति में एकीकृत करके, शिक्षक अपने सबसे महत्वपूर्ण उद्देश्य — प्रत्येक छात्र को उसकी पूर्ण संभावनाओं को साकार करने में सहायता करना — के निकट पहुँच सकते हैं।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1) Ghatak, S., & Singh, S. (2019). Examining Maslow's Hierarchy Need Theory in the Social Media Adoption. FIIB Business Review. https://doi.org/10.1177/2319714519882830

2) Maslow, A. H. (1943). A theory of human motivation. Psychological Review. https://doi.org/10.1037/h0054346

3) Mindset: the new psychology of success. (2006). Choice Reviews Online. https://doi.org/10.5860/choice.44-2397

4) Psychology and teaching. Maslow, Abraham H. Motivation and personality, 2nd Ed. New York: Harper & Row, 1970, 369 p., $5.95 (paper). (1970). Psychology in the Schools. https://doi.org/10.1002/1520-6807(197010)7:4<410::aid-pits2310070426>3.0.co;2-3

5) Taras, H. (2005). Nutrition and Student Performance at School. Journal of School Health. https://doi.org/10.1111/j.1746-1561.2005.00025.x

6) Tay, L., & Diener, E. (2011). Needs and subjective well-being around the world. Journal of Personality and Social Psychology. https://doi.org/10.1037/a0023779

7) Wahba, M. A., & Bridwell, L. G. (1976). Maslow reconsidered: A review of research on the need hierarchy theory. Organizational Behavior and Human Performance. https://doi.org/10.1016/0030-5073(76)90038-6